अन्न/संग-दोष वाले रह न सकें

(इल्कतुर्ती-A.P.)

वीसीडी नं.2288 ऑडियो नं.2774 मु.04.11.1966 व्याख्या ता.4/2/17

प्रातः क्लास चल रहा था 4.11.1966; शुक्रवार को पहले पेज के मध्यांत में बात चल रही थी। वो बेहद का बाप, जिसको हम पतित-पावन कहते हैं, वो आ करके कहते हैं कि ये जो तुम्हारी शैतानी है 5 विकारों की-'वि' माना विपरीत, 'कार' माना कार्य-भगवान की श्रीमत के विपरीत जो कार्य है- विकार, उस विकार की शैतानी को छोड़ो। अभी कलियुग के अंत, संगम के आदि अर्थात् सतयुग के आदि में ये शैतानी छोड़ना तो अच्छा है ना और सो भी कहते कौन हैं? जो कहते हैं उनके ऊपर निश्चय होना चाहिए। पहले-2 यही निश्चय होना चाहिए कि बेहद का बाप कहते हैं। कौन कहते हैं? (किसी ने कहा- बेहद...) कौन है? शिव बाप। उनको मुख है जिनका नाम शिव है, बिन्दु-2 आत्माओं का बाप है? मुख है? (किसी ने कहा- नहीं है) तो कैसे कहते हैं? (किसी ने कहा- मुकर्रर साकार का रथ) हाँ, बेहद के बाप दो हैं- एक आत्माओं का बाप असोचता और एक मनुष्यों का बाप मननशील। (निराकार-साकार) दोनों की प्रवृत्ति है। आत्मा जो सदाकाल आत्मा है, कभी भी देहभान में आती ही नहीं, उनकी आत्मा देहधारी की आत्मा में प्रवेश करके कहती है। कैसा देहधारी? जो इस मनुष्य-सृष्टि के वृक्ष में बड़े-ते-बड़ा देह-अभिमानी, देहधारी (मुर्दा अर्थात् शव जैसा) है। वो शिव बाप को याद करके बड़े-ते-बड़ा आत्माभिमानी बनता है और फिर (वही) बड़े-ते-बड़ा जो आत्माभिमानी (बना) है वो कलियुग के अंत में, विनाश काल में क्या बनता है? बड़े-ते-बड़ा देह-अभिमानी (देह अहंकारी रशियंस का भी बाप) बनता है। तो महादेहंकारी रशियंस का भी बाप है, आत्माभिमान में रहने का जो पुरुषार्थ करते हैं, उनका भी बाप है। तो उनको, 'उनको' माना एक को या ज़्यादा को? 'उसको' माना एक को; और यहाँ बोला क्या है? उनको। किनको? एक को या दो को? उन दोनों (प्रजापिता+ब्रह्मा) को, बेहद के जो बाप हैं उनको ये ख्याल होवे। क्या? उन आत्माओं को भी ख्याल होवे जिन आत्माओं का बाप शिव है, कहते हैं और उनको भी ख्याल होवे जो देह-अभिमानी साँड़े बनते हैं। उनको भी ये ख्याल होवे कि अगर मेरी नहीं मानेंगे तो वो धर्मराज तो बहुत ही तुमको तंग करेगा। ये 'मेरी मानेंगे' किसने कहा? शिव बाप की आत्मा ने कहा साकार के द्वारा कि मेरी अगर नहीं मानेंगे तो क्या होगा? वो धर्मराज तुमको बहुत ही तंग करेंगे। वो धर्मराज, दूर क्यों कर दिया? क्योंकि वो पार्ट अभी बजने वाला नहीं है। अभी तो मैं प्यार के सागर का पार्ट बजाता हूँ। मैं हूँ ही प्यार का सागर। मेरा गायन कोई दुख के सागर का नहीं है। कौन गाया जाता है प्यार का सागर? एक भगवान ही प्यार का सागर गाया जाता है। तो मैं बड़े प्यार से तुमको कहता हूँ कि ये शैतानी का काम, 5 विकारों का काम छोड़ दो। नहीं मानेंगे तो वो धर्मराज जो धर्म का राजा है; कौन है धर्मराज? धर्म अर्थात् धारणाओं का राजा कौन है? (किसी ने कहा- ब्रह्मा वाली आत्मा) हाँ, धारणाओं का राजा, जो सभी धारणाओं का गुणराज कहा जाता है- सहनशक्ति। (देवों की) उस सहनशक्ति को धारण करने वालों में राजा है। वो अभी सहन करता है। अभी संगम के कलियुगी हिस्से में सब सुनता है, सब देखता है। किसकी आँखों से देखता है? राम बाप (और ब्रह्मा) की आँखों से देखता है। क्या यादगार दिखाया गया है? संगम में कृष्ण ब्रह्मा बनता है और संगम में राम की आत्मा शंकर बनती है। तो शंकर के मस्तक में यादगार के रूप में क्या दिखाया जाता है? चन्द्रमा। अधूरा चन्द्रमा है; सम्पूर्ण नहीं है। जो अधूरी आत्माएँ होती हैं वो दूसरों के गुणों को देखती हैं या अवगुणों को ज़्यादा

देखती हैं? (किसी ने कहा- अवगुणों को) तो वो धर्मराज तुम्हारे सब अवगुणों को चुपचाप सहन कर रहा है। वो आत्मा साकार में थी तब भी सहन करती थी या सामना करती थी? सहन करती थी। उस देहधारी आत्मा के वो संस्कार सहन करने के सूक्ष्म शरीर में अभी भी हैं। वो देखते हुए भी अवगुणों को देखती नहीं है। अभी भी क्या कर रही है? सहन कर रही है। तो जो बच्चे ऐसी सहनशील आत्मा को भी, जिसके फॉलोअर्स आज भी दुनिया में हैं। कौन हैं-पुरुष हैं या माताएँ हैं या कन्याएँ? कौन हैं जो ज़्यादा सहन करती हैं? माताएँ। उन सब माताओं की माता- ब्रह्म माँ, बड़े-ते-बड़ी माँ, जगदम्बा के रूप में, फिर महाकाली का रूप (भी) धारण करेगी। वो महाकाली इस दुनिया के विपरीत कर्म करने वाले विकारियों को, सबको अनिश्चयबुद्धि की मौत सुलाय देगी, एक को भी नहीं छोड़ेगी। फिर क्या होगा? बाप के प्रति जो अनिश्चयबुद्धि हो जाएँगे तो ड्रामा के प्रति अनिश्चयबुद्धि हो जाएँगे; ईश्वरीय परिवार/ब्राह्मण परिवार के प्रति भी अनिश्चयबुद्धि हो जाएँगे। ऐसे महापापियों को वही (अधूरा चन्द्रमा की) आत्मा जिसने इतना सहन किया है, वो हिसाब-किताब कहाँ लेगी? इसी संगमयुग पर हिसाब-किताब लेगी, बहुत तंग करेगी। वो आत्मा धर्मराज के रूप में सज़ाएँ बहुत देगी। क्योंकि तुम अभी किसी की नहीं मानते हो- न ब्रह्मा की मानते हो, बड़ी माँ की भी नहीं मानते हो और जगतपिता की भी नहीं मानते हो। मैं जगतपिता नहीं हूँ। कौन? शिव। मैं तो परमपिता हूँ। मैं तो सब बच्चों को प्यार देता हूँ; लेकिन जो सब देहअभिमानियों का बाप (राम) है, वो फिर धर्मराज को भी ऑर्डर देगा कि डोरी तुम्हारे हाथ में है। फिर मार्शल लॉ लग जावेगा। मिलेट्री शासन होता है ना, उसमें कोई भी अगर गलती करते हुए देखा जाता है, कानून तोड़ते हुए देखा जाता है, तो क्या करते हैं? गोली से ठाँ कर देते हैं; थोड़ी भी दया नहीं दिखाते।

तो देखो, तुम अभी किसी की नहीं मानते हो। अभी माने कभी? संगमयुग में जब भगवान बाप आया हुआ है। भगवान बाप के जो बड़े-2 बुद्धिमान बच्चे हैं- जगतपिता-जगदम्बा, अष्टदेव, किसी की बात नहीं मानते हो। वो ऑलमाइटी अथॉरिटी (शिव) बाप कहते हैं कि मैं ऑलमाइटी अथॉरिटी, मास्टर अथॉरिटी किसको बनाता हूँ? मास्टर उसे कहा जाता है जो प्रैक्टिकल कर्मेन्द्रियों से करके दिखाता है। मैं (शिव) तो थ्योरी का ज्ञान देता हूँ। मैं तो अकर्ता हूँ। कौन? शिव बाप। मैं कुछ कर्ता-धर्ता नहीं हूँ। तो प्रैक्टिकल में कर्ता-धर्ता कौन है अव्वल नम्बर? (किसी ने कहा-...राम बाप) हाँ, जिसका इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर सदा शरीर कायम रहता है। शास्त्रों में गायन है कि एक ही आत्मा है इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आदि से लेकर अंत तक पार्ट बजाने वाली, जो कभी मरती नहीं है, वो अजन्मा (भी बनती) है। बेहद के रूप में है या हद के रूप में? बेहद के रूप में अजन्मा है माना उसकी अनिश्चय रूपी मृत्यु होती ही नहीं। जिसकी मृत्यु नहीं होगी उसका जन्म भी नहीं होगा। "ध्रुवम् जन्म मृतस्य च।" (गीता 2/27), जो मरता है उसका जन्म भी निश्चित रूप से होता है। तो मैं ऐसी बड़े-ते-बड़ी अथॉरिटी आत्मा के शरीर का आधार ले करके तुमको कहता हूँ कि इस शैतानी को छोड़ दो।

बेहद का बाप है। एक ही शरीर में दो बेहद के बाप हैं; डबल बाप हैं या एक ही बाप है? (किसी ने कहा- डबल) डबल बाप आया हुआ है बेहद का। बाप की भी अगर नहीं मानेंगे, तो धर्मराज तो बहुत सारी कड़ी सज़ा देंगे। सारी माने? निश्चयबुद्धि बनने के बाद, अंजाम करने के बाद, संसार के सामने बोलने के बाद कि हम भगवान के बच्चे हैं। दुनिया के सामने बताया कि नहीं बताया! किसके बच्चे हैं? भगवान के बच्चे हैं और भगवान के बच्चे हो करके, दुर्योधन-दुःशासन बन करके (हिसा का) विपरीत कार्य किया, इन्द्रियों से दुख देने का काम किया, तो धर्मराज बहुत कड़ी, सारी कड़ी सज़ाएँ देंगे। जब से तुमको निश्चयबुद्धि का जन्म हुआ है, बाप के बच्चे बने, तब से

लेकर तुमने जो-2 काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के आधार पर विपरीत कर्म किए हैं- उन सारे ही कर्मों की सारी ही कड़ी सज़ा देंगे; क्योंकि तुमने ही मेरे को 63 जन्म बुलाया। जन्म-जन्मांतर बुलाया और जब मैं आता हूँ तो (भी) तुम मेरे को अंजाम करते हो कि तुम ईश्वर के बच्चे आत्मा हो। तुम कोई देह नहीं हो। क्या हो? आत्मा हो; देह नहीं हो। तो देह का जो कर्म है, देह की इन्द्रियों का जो कर्म है, देह की इन्द्रियों से जो तुम दुख देने का पापकर्म करते हो, उन सारे ही दुष्कर्मों की मैं धर्मराज बन करके सज़ा दूँगा। क्यों? कारण बताया कि तुमने ही तो मेरे को बुलाया है। आए हैं पतितों को पावन बनाने के लिए। अभी ये जानते तो हो किसके लिए? अभी वो बेहद का बाप आए हैं। किसके लिए आए हैं? जिन्होंने बुलाया है- हे पतित-पावन, आओ! हम बहुत दुखी हैं। उनके लिए बुलाया है या विदेशियों के लिए बुलाया है? कौन बुलाते हैं- भारतवासी बुलाते हैं या विदेशी बुलाते हैं? (किसी ने कहा- भारतवासी) अभी भारतवासी बहुत विकारी-दुखी हो गए हैं या विदेशी बहुत विकारी-दुखी हो गए हैं? (सभी ने कहा- भारतवासी) तो तुमने ही बुलाया है पतितों को पावन बनाने के लिए।

अभी ये तो किसके लिए बाबा बैठ करके वाणी चलाते हैं, तुम समझ सकते हो। विदेशियों के लिए? (किसी ने कहा- भारतवासी) जो जास्ती पतित बन जाते हैं कलियुग के अंत में उन भारतवासियों के लिए ही बैठ करके वाणी चलाते हैं, अपने बच्चों के लिए चलाते हैं। अपने बच्चे क्यों कहा? क्योंकि मैं भारत में ही आता हूँ। किसमें आता हूँ? भारत में। तो भारत (के दिल) में जो रहते हैं वो किसके बच्चे हुए? भगवान बाप के डायरैक्ट बच्चे हैं। तो दुनिया के बच्चों को सुधारूँगा, पहले इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट के बच्चों को सुधारूँगा या अपने बच्चों को सुधारूँगा? (किसी ने कुछ कहा-...) ये ईश्वरीय वाणी कोई दूसरों के लिए नहीं चलाते हैं। दूसरे कौन? विदेशी, विधर्मी, विधर्मी धर्मपिताओं को जो (फालोअर) अपना बाप मानते हैं। जैसे दुनिया के 200-250 करोड़ क्रिश्चियन्स किसको बाप मानते हैं? क्राइस्ट को बाप मानते हैं। मेरे को नहीं मानते। तो मैं अपने बच्चों को पहले सुधारूँगा, सहज-2 प्यार से नहीं मानेंगे तो जबरदस्ती भी सुधारूँगा। कोई भी हालत में अपने बच्चों को देहभान का छिलका छुड़ा करके पहले अपने घर ले जाऊँगा। तो धर्मराज देहभान का छिलका उतारने के लिए क्या कहते हैं? हड्डी-2 तोड़ दूँगा। फिर ये देहभान का छिलका कहाँ टिकेगा जब हड्डियाँ ही नहीं रहेंगी! खाल उधेड़ दूँगा। शिव बाप तो प्यार का सागर है, फिर कौन उधेड़ देगा? धर्मराज बाप ब्रह्मा के मुख से कहते हैं ना! धर्मराज बाप कहते हैं, ब्रह्मा के मुख से जो मुरली चलाई वो धर्मराज बाप चलाते हैं। कौन चलाता है-शिव बाप कहते हैं या धर्मराज वाली आत्मा/ब्रह्मा की आत्मा इण्टरफिअर करके बोलती है? इण्टरफिअर करके बोलती है। धर्मराज हड्डी-2 तोड़ देगा, खाल उधेड़ देगा।

तो पक्का समझ लो। दूसरे धर्मपिताओं के बच्चों के लिए नहीं कहता हूँ। उनसे कहूँगा इनडायरैक्ट अखबारों के द्वारा, टी.वी. के द्वारा, इण्टरनेट के द्वारा। डायरैक्ट प्रैक्टिकल में साकार में उनके सामने आ करके नहीं कहूँगा। कयामत के समय में उनके सामने उनके धर्मपिताएँ (भी) होंगे; मैं उनके सामने प्रैक्टिकल में नहीं होऊँगा। मैं किसके सामने आता हूँ? किसके सन्मुख आता हूँ? भारतवासी बच्चों के सामने आता हूँ, जो सृष्टि रूपी वृक्ष में आदि से ले करके, सतयुग के आदि से और कलियुग के अंत तक जो सृष्टि-वृक्ष का नीचे (बीज) से ले करके ऊपर तक एक ही तना गया है। विधर्मियों-विदेशियों की तरह दाएँ-बाएँ मुड़ता है क्या वो तना? नहीं मुड़ता है। उस तने में रहने वाले तुम जन्म-जन्मांतर के भारतवासी बच्चे हो। कहाँ के वासी? भारतवासी। 'भा' माना ज्ञान की रोशनी, 'रत' माना लगा रहने वाला अर्थात् जो (व्यास की तरह) ज्ञान की रोशनी में ही आदि से ले करके अंत

तक लगा रहता है। सतयुग के आदि में प्रैक्टिकल इन्द्रियों के द्वारा (आदि) नारायण के रूप में, त्रेता में राम के द्वारा, प्रैक्टिकल इन्द्रियों के द्वारा ऐसे श्रेष्ठ कर्म करके दिखाता है, जिन्हें श्रेष्ठाचारी कहा जाता है और द्वापर में भी भल द्वैतवादी युग आता है-दो-2 धर्म, दो-2 राज्य, दो-2 कुल, दो-2 भाषाएँ-वहाँ भी विदेशी मेरे को पहचानते हैं या वो (सभी) भारत की आत्माएँ पहचानती हैं, जो दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होती रही हैं? कन्वर्ट होने वाले मेरे बच्चे नहीं हैं। हैं वो भी नम्बरवार भारतवासी। सतयुग-त्रेता में तो आते हैं; लेकिन कच्चे ब्राह्मण हैं, 9 कुरियों में से बाद वाली (8) कुरियों के ब्राह्मण हैं, जो (कच्चे) ब्राह्मण सो कच्चे देवता बनते हैं, कच्चे देवता सो ब्राह्मण होने के कारण दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होते रहते हैं। जो सूर्यवंशियों का, आदि सनातन धर्म वालों का पक्का तना है, नीचे से लेकर ऊपर तक सीधा जाता है, वहाँ के वासी नहीं हैं। उन विधर्मियों को मैं नहीं समझाता हूँ, उन विधर्मियों के सामने आकर नहीं कहता हूँ। नहीं, बाप बच्चों के लिए वाणी चलाते हैं। चाहे माता के रूप में वाणी चलाते हैं। बड़ी-ते-बड़ी माता कौन? ब्रह्मा; और चाहे पिता के रूप में सुप्रीम टीचर बन करके वाणी चलाते हैं। कौन? राम बाप। “राम बाप को कहा जाता है” आज भी मंदिरों में यादगार बने कृष्ण बच्चे को कहा जाता है, तो राम बाप के द्वारा ये सुप्रीम टीचर वाणी चलाते हैं।

तुमको जब ये मालूम ही पड़ गया कि हम ही पावन देवताएँ थे और हम ही देवी-देवता धर्म वाले थे। अभी हम जान गए हैं कि द्वापरयुग से जो नं.वार पावरफुल धर्मपिताओं की आत्माएँ सत् धाम से डायरैक्ट आती हैं, , उन पावरफुल आत्माओं की मत पर, उनकी शैतानी की मत पर हम बड़े-ते-बड़े शैतान बन गए। हम क्यों बन गए? एक बड़े राजा का बच्चा हो और एक गरीब का बच्चा हो, दोनों ही कुसंग में आ जाएँ, तो ज़्यादा खतरनाक कौन-सा बच्चा बनेगा? (किसी ने कहा- राजा का बच्चा) तो तुम बड़े-ते-बड़े बापों का बाप/धर्मपिताओं का भी बाप-जगतपिता और जगतपिता का भी बाप, परमपिता सर्वशक्तिवान के (डायरेक्ट) बच्चे हो। तो तुम कुसंग में आ करके दुनिया में सबसे जास्ती पतित बन गए।

बरोबर शैतान की मत पर पतित बने हैं। किसकी मत पर? शैतानों की मत पर पतित बने हैं। शैतान रावण को कहा जाता है, रुलाने वाले को रावण कहा जाता है। कौन हुए रुलाने वाले रावण? ये जो इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट और उनके फॉलोअर्स-यथा राजा तथा प्रजा-ये दुनिया के बड़े-ते-बड़े (दुःखदाई हिंसक) शैतान हैं। कामी-इस्लामी, क्रोधी-क्रिश्चियन्स, लोभी-मुस्लिम वगैरह-2। इन सबके संग के रंग में आकर; क्योंकि ये सब धर्म वालों के फॉलोअर्स टाइम-टू-टाइम भारत में आ करके, भारतमाता की गोद में (आक्रामक रूप में) आ करके (आततायी) राज्य करते हैं। दिल्ली के तख्ते पर सब धर्म वालों ने राज्य किया है। क्या समझे? ये भारत मातृदेश है। कौन-सा देश? मातृदेश। भारत माता कहा जाता है। भारत पिता कहा जाता है? (किसी ने कहा- नहीं कहा) तो मातृदेश है। माता की गोद में कैसे भी खराब-से-खराब, कोढ़ी, काने, लुच्चे, लफंगे, चोर, डकैत बच्चे ही क्यों न हों, माँ के नज़दीक आते हैं तो माँ उनको अपनी गोद में रख लेती है; रखना चाहती है या दूर फेंक देती है? (किसी ने कहा- रखना चाहती है) तो ये विदेशी-विधर्मी आततायी बन करके भारत में आते रहे, हिस्ट्री उठाकर देख लो- भारत ने, भारत माता ने इन्हें अपनी गोद में रहने का स्थान दिया या नहीं दिया ? दिया। इसका प्रैक्टिकल प्रूफ है- दिल्ली राजधानी ही दुनिया में एक ऐसा शहर है, एक ऐसी राजधानी है जहाँ सब धर्म के लोग ज़्यादा-से-ज़्यादा तादाद (में) अपना अड्डा जमाय बैठे हैं। ऐसा दुनिया का एक भी शहर नहीं है। तो ये (दिल्ली खास) मातृदेश है। मातृदेश की राजधानी है ‘दिल्ली’। यहाँ जगह सबको मिली है; लेकिन बाप वाणी किसके लिए चलाते हैं? (किसी ने कहा-

भारतवासियों के लिए) भले यहाँ आकर रहते हैं; लेकिन वाणी उन बच्चों के लिए चलाते हैं जो कभी भी (जीवन रहते) दूसरे धर्म में कन्वर्ट नहीं हुए हैं।

अभी खास करके तुम बच्चों को शैतानी पहले छोड़ देनी चाहिए। शैतान है रावण। रावण के 10 सिर दिखाए जाते हैं, 5 विकार पुरुष रूप में- इब्राहीम, क्राइस्ट, (मुहम्मद) वगैरह-2; और उनकी सहयोगिनी शक्तियाँ भी तो उतरी होंगी परमधाम से? उतरती हैं; परंतु वो आत्माएँ तो सत्धाम से आने के कारण उस समय सात्विक होती हैं। वो जिनमें प्रवेश करती हैं वो भारत के कच्चे ब्राह्मण सो कच्चे देव आत्माएँ होती हैं, जो सतयुग-त्रेता से ही जन्म लेते हुए द्वापर में आती हैं, सुख भोगते-2 इन्द्रियों से कमज़ोर पड़ जाती हैं। उन कमज़ोर आत्माओं में वो पावरफुल धर्मपिताएँ प्रवेश करते हैं और उनको कन्वर्ट कर लेते हैं। कच्ची आत्माएँ हैं। उनका नाम दिया है-मंदोदरी। 'उदर' माने पेट। कैसी उदरी? मंद बुद्धि (रूपी पेट) वाली। जो रावण के संग में आ करके जन्म-जन्मांतर ऐसी बुद्धि वाली बन जाती हैं कि सत् भगवान इस सृष्टि पर आता है, तो भी सत् बाप की सच्ची वाणी को नहीं पहचान पातीं, पहचान करके भी विरोध करने लग पड़ती हैं। बच्चा भी बनती हैं; लेकिन कम कुरी के ब्राह्मण और कच्ची रह जाने के कारण दूसरों को अपना बाप बनाकर बैठ जातीं माना परमत पर चलने लग पड़तीं, दूसरों के संगठन में आ जातीं और बाप को छोड़ बैठतीं। तो पक्की-2 पहचान होनी चाहिए कि हम पक्के-2 भारतवासियों का बेहद का बाप कौन है? हम उसकी मत पर चलेंगे। जो आत्माभिमानी बच्चे पुरुषार्थ करके अपन को ज्योतिबिन्दु आत्मा की स्मृति में टिकाय लेते हैं, उन बच्चों का बाप आया हुआ है, आत्माभिमानियों का बाप, (पक्के बीज रूप रुद्राक्ष) देवात्माओं का बाप आया हुआ है। विकारों में डूबते रहना-ये तो जन्म-जन्मांतर जो दूसरे धर्मों में कन्वर्ट हो गए हैं उन धर्मपिताओं की मत पर चल करके, देह-अभिमानी विकारी धर्मपिताओं के बच्चे बन पड़े हैं। कामी-इस्लाम, क्रोधी-क्रिश्चियन, लोभी-मुस्लिम जिन्होंने जन्म-जन्मांतर भारत पर डकैत बन करके आक्रमण किए, खून की नदियाँ बहाईं लोभ के आधार पर कि सोमनाथ मंदिर में अथाह धन है, चलो लूटें। तो लोभ हुआ ना! ऐसे लोभियों के संग के रंग में आ करके शैतान बन पड़े हैं और बाप को भूल जाते हैं। पहचान करके भी भूल जाते हैं। एक बाप की मत पर न चल करके, एक (राम) बाप से अव्यभिचारी ज्ञान न सुन करके अनेकों (रावण-मुखों) से ज्ञान सुनने लग पड़ते हैं। व्यभिचारी ज्ञान हो जाता है। ऐसी आत्माएँ द्वैतवादी द्वापरयुग से व्यभिचारी धर्मों में कन्वर्ट हो जाती हैं।

तुम बच्चे तो सदा सत् बाप के द्वारा जो धर्म स्थापन किया हुआ है-सनातन धर्म, सनतकुमार के बच्चे हो। जिसके नाम पर सनातन धर्म पड़ा। नाम सनातन धर्म, सत् सनातन धर्म, जो सतयुग के आदि से ले करके कलियुग के अंत तक कहीं-न-कहीं इस भारतवर्ष में ज़रूर कायम रहता है। आज भी भारत में ऐसे-2 बिरले परिवार हैं जहाँ 60-60, 70-70, 80-80 लोग एक परिवार में, एक चूल्हे पर खाना खाते हैं। उनका एक ही मुखिया होता है। उसी मुखिया की मत पर चलते हैं। जो भाषा मुखिया बाप की, वो ही भाषा सब बच्चों की होती है। ऐसे नहीं उस परिवार का एक बच्चा काँग्रेसियों की भाषा बोले, दूसरा बच्चा बहुजन समाजवादी पार्टी की बात बोले और तीसरा बच्चा कम्युनिस्ट पार्टी के बोल बोले, ऐसा नहीं हो सकता। तो वो सनातन धर्म की प्रक्रिया कलियुग के अंत में आज भारत में प्रायः लोप है। तुम उन बच्चों में से (खास) चुने हुए बच्चे हो। तो जब तुमने अपने को पहचान लिया कि हम एक ज्ञान-सूर्य के बच्चे हैं; चन्द्रवंशी नहीं हैं, चन्द्रमा के बच्चे नहीं, सूर्यवंशी हैं। तो अपने वंश का मान रखना चाहिए ना! जान लेना चाहिए कि ये जो विकारी मत है 5 विकारों का रास्ता, ये शैतानों की मत है। ये मत छोड़ना

पड़े और उन विकारों में भी जो पहले नंबर का विकार मुखिया है, वो कौन? काम विकार, कामांग। उसकी एक्ट जो पुरुषों में खास देखी जाती है, दुर्योधन-दुःशासन बन करके बहुत दुख देते हैं, दुष्ट युद्ध करते हैं। प्यार का युद्ध करते हैं? दुष्ट युद्ध करते हैं, दुष्ट शासन करते हैं। ऐसे दुर्योधन-दुःशासनों के चंगुल में आ करके भारत की माताएँ जो कभी (असुर संघारणी) शिवशक्तियाँ थीं, वो अबलाएँ बन जाती हैं। क्या बन जाती हैं? कलियुग के अंत तक आकर अबलाएँ बन जाती हैं। तो ये तुम्हारी बुद्धि में जो पहला नम्बर का विकार है, वो तो (पहले-2) छोड़ना ही पड़े।

बच्ची, वो दिन जल्दी ही आ जाएँगे, जबकि कभी भी कोई विकारी इस ब्राह्मण परिवार के संगठन में पाँव भी नहीं रख सकेगा। अभी तो दुर्योधन-दुःशासन घुसे पड़े हैं, कीचक घुसे पड़े हैं, गन्दे/डर्टी ब्रूट्स, जो शिव की शक्तियों को बरगलाय-2 करके अबला बनाते हैं। तो पक्का समझो कि अभी जल्दी ही वो दिन आने वाले हैं, जबकि कोई भी पतित आ करके इस सभा में बैठ नहीं सकेंगे, जो (विधर्मियों के) संग के रंग में आकर पतित होते रहते हैं। किसके संग के रंग में? विकारियों के संग के रंग में रोज़ आते हैं, रोज़ विकारी बनते हैं। उन विकारियों के संग में नहीं रहना है। अगर उनके साथ बैठ करके/रह करके दिन का 24 घण्टे का लम्बे समय का टाइम बिताएँगे और 1/2 घंटे के लिए सत् बाप का सत्संग करेंगे तो ज़्यादा संग किसका लगेगा? विकारियों का संग लगेगा। ऐसे जो विकारी बन करके यहाँ बाप की सभा में बैठे हुए हैं और अभी तक बैठे रहे हैं, बाबा ने पहले ही बता दिया था, वो इस ब्राह्मणों की सभा में आगे चल करके बैठ भी नहीं सकेंगे। भले कोई भी हो। मान लो कोई बड़ा सहयोगी हो, बहुत धन देता हो; क्योंकि पांडवों को तीन पैर पृथ्वी तो चाहिए, बड़े-2 मकान देने वाला हो, कोई भी हो। वो भी आगे चल करके आएँगे। वो समय भी आएगा, अभी सन् 1966 में वो समय नहीं है कि उनको मना कर दें- (कि) तुम संगदोष में आने वाले हो, अन्नदोष में आने वाले हो, तुम्हारी बुद्धि सुधर नहीं सकती। मना कर देंगे। अभी वो समय नहीं आया है। कब? सन् 1966 में। अभी तो शुरुआत है। शुरुआत में प्यार से समझाया जाता है कि कड़क रूप धारण किया जाता है? (किसी ने कहा- प्यार से समझाया जाता है) तो शुरुआत है। समझते हैं ये बेसिक नॉलेज लेने वाले छोटे-2 बच्चे हैं, बालिग बुद्धि हैं या नाबालिग बुद्धि हैं? बालिग बुद्धि नहीं हैं, बुद्धि से परिपक्व नहीं हैं; इसलिए भगवान के इशारों को/भगवान की बातों को दरकिनार कर देते हैं। तो फ्री छोड़ना पड़ता है। कब की बात? आदि की बात बताई 1966 की, जब ब्रह्मा बाबा जीवित थे, ब्रह्मा की गोद में बच्चे खेलने वाले थे। तो गोद में खेलने वाले बच्चों के साथ माँ-बाप प्यार से पेश आते हैं या कठोर बर्ताव करते हैं? शास्त्रों में भी लिखा है- 'पंचवर्षाणि लाड़न्ते', पाँच वर्ष तक बच्चों को प्यार ही/लाड़ ही करना चाहिए। फिर धीरे-2 'दसवर्षाणि ताड़न्ते', पंद्रह (10) वर्ष तक ताड़ना भी देनी पड़ती है। तो अभी बच्चों को फ्री छोड़ना पड़ता है; परंतु जब समय आएगा, कौन-सा समय आएगा? क्या समय आएगा? बाबा ने तो इशारा दे दिया, बच्चों के सामने पहली मूर्ति प्रत्यक्ष होती है प्यारमयी/ममतामयी माँ की। तो बेहद के बच्चों के सामने भी कौन-सी मूर्ति त्रिमूर्ति में से प्रत्यक्ष हुई? ब्रह्मा माँ की मूर्ति, प्यारभरी/ममतामयी मूर्ति; लेकिन इशारा दे दिया, वो समय भी आएगा तो फिर किसको भी अंदर आने का अलाउ नहीं करेंगे। जो विकारियों के संग में लगातार आते रहते हैं, विकारियों के अन्नदोष में आते रहते हैं, उनको अन्दर में आने का अलाउ नहीं करेंगे। क्यों? अभी माँ की गोद में पल रहे हैं तो अलाउ करते हैं। बड़े हो जाएँगे तो समझदार हो जाएँगे, तो फिर अलाउ क्यों नहीं करेंगे? (किसी ने कुछ कहा-...) नहीं! यहाँ तो जैसे गीता में कहा है- चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म स्वभावतः। (गीता 4/13) भगवान कहते हैं कि मैंने चार

वर्णों की रचना की है, उनके गुणों को, कर्मों को (और) उनके स्वभाव को देख करके। साँप का, बिच्छू का स्वभाव क्या होता है? कितना भी प्यार करो, कितना भी दूध पिलाओ, क्या करेगा? काटेगा ज़रूर।

तो अभी 1966 में तो अलाउ करते हैं। तो क्या ब्रह्मा की मूर्ति का ही कार्य चलता रहेगा? शिव की तो तीन मूर्तियाँ हैं ना! तीन मूर्तियाँ हैं कि एक मूर्ति? (किसी ने कहा- तीन मूर्ति) मूर्ति माने साकार या आकार, अमूर्त? साकार माने मूर्ति। तो पहली मूर्ति का ही कार्य अंत तक नहीं चलता रहेगा। ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण धर्म की स्थापना के बाद क्या होगा? जो ब्रह्मा की गोद में पलने वाले नौ कुरियों के नम्बरवार ब्राह्मण हैं, उनकी छँटनी की जाएगी। फिर कोई विकारी को अलाउ नहीं करेंगे। विकारियों का संग लेने वालों को, विकारियों के हाथ का अन्न खाने वालों को, विकारियों के द्वारा कमाए हुए अन्न को खाने वालों को अलाउ नहीं करेंगे। बोलेंगे। बोलेंगे माना ब्रह्मा के मुख से बोलेंगे क्या? जो माँ प्यार भरा मुख वाली होती है, उसके मुख से बोलेंगे? नहीं। त्रिमूर्ति में ध्यान से देखो, कौन-सी मूर्ति सहज-2 बैठी हुई है, सहज भाव से और कौन-सी मूर्ति कड़क होकर बैठी है? (किसी ने कहा- शंकर) हाँ! अगर प्यार से नहीं मानेंगे तो जो कड़क पार्ट है। मुरली में क्या बोला? विनाश काल में मार्शल लॉ लगेगा। मार्शल लॉ में किसका शासन होता है? मिलेट्री का शासन होता है। हमारी है रूहानी मिलेट्री, रूह की स्थिति में, आत्मा की स्थिति में स्थित होने वालों की (रूहानी) मिलेट्री; देहभान में रहने वालों की मिलेट्री नहीं है। जो आत्मिक स्थिति में स्थित होने वाले ज्ञान-सूर्य के बच्चे हैं, वो देहभानियों पर विश्वास नहीं करेंगे, देह-अभिमानियों से मित्रता नहीं करेंगे। किसका डायरैक्शन मानेंगे? एक रूहानी बाप का डायरैक्शन मानेंगे। रूहानी बाप कौन-सी मूर्ति के द्वारा डायरैक्शन देगा? शंकर है रूहानी मिलेट्री का मार्शल। झाड़ के चित्र में ऊपर बैठा हुआ है। सभी आत्माओं की डोरी उसके बुद्धि रूपी हाथ में हैं। उस बुद्धि के आकर्षण से सभी मनुष्यात्माओं को नम्बरवार खींच रहा है। उस मूर्ति के द्वारा बोलेंगे, जिसका नाम एकमात्र मेरे नाम के साथ जोड़ा जाता है। कौन बोला? शिव बाप बोला। किसका नाम जोड़ा जाता है शिव के साथ? एकमात्र शंकर का नाम जोड़ा जाता है, (और) कोई देवता का नहीं। नारायण का नहीं, ब्रह्मा का नहीं, विष्णु का नहीं, एक का ही नाम जोड़ा जाता है। कोई राक्षस का भी नहीं, मनुष्य का भी नहीं। एक ही आत्मा है जो शरीर धारण करके इस रंगमंच पर शंकर के नाम-रूप से प्रत्यक्ष (होती) है। आज भी उसकी यादगार दिखाई जाती है। दुनिया में सबसे जास्ती मूर्तियाँ किसकी मिलती हैं? नग्न रूप, आत्मिक रूप में स्थिर, देहभान रूपी कपड़े को छोड़ने वाले (नग्न) शंकर (या तीर्थंकर) की मूर्ति मिलती है। उसके द्वारा बोलेंगे, ये पतित है, ये मूत पलीती है, पतितों का संग छोड़ने वाला नहीं है। इनको बाहर निकालो। क्या बोलेंगे? इनको, जो अव्वल नम्बर के ब्राह्मण सो देवता बनने वाले, अल्लाह के द्वारा अव्वलदीन, अव्वल धर्म स्थापन करने वाले हैं, उनके संगठन से इनको बाहर निकालो। यहाँ नहीं बोलेंगे माना 1966 में जो सभा लगी हुई थी ब्राह्मणों की, ब्रह्मा की गोद में बैठने वाले, मिक्स ब्राह्मणों की जो सभा थी, उस सभा में नहीं बोलेंगे।

इन्द्र के, ये ज्ञान इन्द्र है ना। किसके बच्चे हैं? इन्द्र के बच्चे हैं। इन्द्र किसका नाम है? जिसने इन्द्रियों को जीता उसका नाम 'इन्द्र' है। इन्द्र राजा को भी कहा जाता है। राजा वो ही बनते हैं जो राजयोग सीख करके अपनी इन्द्रियों पर राजाई करते हैं। तो ये ज्ञान इन्द्र है ना। क्या? इन्द्र क्या करता है? बरसात का देवता कौन है? इन्द्र। कौन-सी बरसात? ज्ञान-बरसात का जो देवता है, राजा है, उस इन्द्र के, ये ज्ञान इन्द्र है। इनकी सभा में कोई भी हो, फिर आने नहीं देंगे। अभी तो आने देते हैं। कभी(कब)? 1966 में तो आने देते हैं। आने देते हैं ना बच्ची! 'बच्ची' क्यों कहा? बच्ची कहके बताया कि अभी बाप का कौन-सा रूप है? प्यार-भरा माता का रूप है। अभी भी

जिसे तुम बापदादा कहते हो, वो बाप कौन है? आत्माओं का बाप, मनुष्यों का बाप (भी) है। कौन है? बेहद का बाप; और उसके साथ चन्द्रमा के रूप में बैठा हुआ कौन है? मनुष्य-सृष्टि का पहला पत्ता, दादा। वो बाप भी है और एक ही शरीर में दादा भी है। वो दादा वाली आत्मा ममतामयी माता का पार्ट बजाने वाली है या नहीं है? वो माता अभी भी अधूरे रूप में, अधूरे चन्द्रमा के रूप में मस्तक पर विराजमान है। ये बेहद के माता और पिता साकार मनुष्य-सृष्टि के अभी भी बच्चों के सामने हैं। इसलिए अभी तो आने देते हैं; क्योंकि अर्धनारीश्वर का रूप है। कैसा रूप है? अर्धनारीश्वर का रूप है-आधा पुरुष रूप और आधा स्त्री (संस्कार) रूप। माना साकार में दोनों पार्ट बजाने वाला है- प्यार का पार्ट बजाने वाली माता भी है और कड़क पार्ट बजाने वाला पिता भी है। तो अभी तो आने देते हैं। आने देते हैं ना बच्ची! 'बच्ची' क्यों कहा? अरे! बच्ची कौन कहता है? (ब्रह्मा) कहता है। माँ का प्यार थोड़ा (बचा), थोड़ा-बहुत टाइम रह गया है तो ले लो। फिर क्या होगा? जिस माँ के लिए बोला है, ब्रह्मा के लिए ही बोला है कि सृष्टि रूपी रंगमंच पर इस आत्मा का 50 वर्ष का (साकार) पार्ट नहीं है। 18 जनवरी, 1969 से ले करके 50 वर्ष कब पूरे होते हैं? 2017/18 में पूरे होने वाले हैं। अभी भी थोड़ा समय (बचा) है, माता का प्यार, प्यार से सुधर जाओ। तो अभी तो आने देते हैं ना बच्ची! कोई-2 ऑफिसर हैं। आने वालों में कोई-2 बड़े-2 गवर्मेण्ट के ऑफिसर हैं। कोई बड़ा है, बड़ा ऑफिसर, बड़ा आदमी, कोई फलाना है, ऑफिसर नहीं है तो मिनिस्टर है, टीरा है माना कोई भी है, मित्र है, चाचा, मामा, काका, ताऊ तुम्हारे हैं ना। कोई-2 का है ना बड़ा ऑफिसर, संबंधी कोई-2 का है कि नहीं बड़ा आदमी? सम्बन्धी है। वो अभी आते तो हैं ना। नहीं आते हैं? आते तो हैं ना बच्ची; परंतु नहीं, वो समय भी आएगा, कोई भी बड़े-ते-बड़ा ऑफिसर हो, छोटा ऑफिसर हो, बड़ा साहूकार हो, छोटा साहूकार हो, मिनिस्टर हो, कलैक्टर हो, कोई भी (हो), कभी भी अंदर नहीं आने देंगे, चाहे वो सब बच्चों के ऊपर अपना फोर्स दिखा करके- पुलिस का, मिलेट्री का, मीडिया का, अखबार का, टेलिविज़न का, रेडियो वालों का फोर्स दिखा करके ढेर-के-ढेर बच्चों को तोड़ दे, बाप का बच्चा बनने से रोक दे, अनिश्चयबुद्धि बना दे। कितने भी लखपति, करोड़पति होंगे, उनको भी अन्दर नहीं आने देंगे। ऐसा कौन-सा फोर्स है? दुनियावी गवर्मेंट के पास तो, बड़े-2 लोगों के पास तो फोर्स है, टाटा बिरला के पास, जो बड़े-2 मिनिस्टरों को इलेक्शन जीतने के लिए ढेर सारा पैसा देते हैं। उनके हाथ में तो वो इलेक्शन जीतने वाले मुट्ठी में हैं या नहीं हैं? मुट्ठी में हैं और जो मिनिस्टर हैं, कलैक्टर हैं, उनके हाथ में पुलिस का फोर्स है। है कि नहीं? है; और गवर्मेंट के राष्ट्रपति, प्राइम मिनिस्टर के हाथ में क्या है? पुलिस फोर्स से भी ऊँचा फोर्स कौन-सा है? जिस्मानी मिलेट्री फोर्स है। उस फोर्स के आधार पर, जो रूहानी स्टेज में नहीं आए हैं, देह-अभिमानी बने पड़े हैं, उनको मौत का डर लगेगा कि नहीं लगेगा? (किसी ने कहा- लगेगा) वो मौत के डर से पुलिस के फोर्स के सामने, मिलेट्री के फोर्स के सामने झुकेंगे या नहीं झुक जाएँगे? झुक जाएँगे; लेकिन मेरे बच्चे(बच्चों में) कौन-सा फोर्स है? रूहानी फोर्स है, आत्मिक स्थिति में स्थित होने वालों का फोर्स है। चाहे वो पाण्डवों के रूप में हैं, चाहे वो शिव की शक्तियों के रूप में हैं, वो फोर्स कभी झुकने वाला नहीं है। झुकेगा? नहीं झुकेगा; क्योंकि वो तो आत्मा हैं। क्या हैं? आत्मा हैं। आत्मा को मौत का डर होता है क्या? होता है? नहीं होता। मौत का डर किसे होता है? देहभानियों को होता है। तो ये दुनिया का ऊँचे-ते-ऊँचा फोर्स है, ईश्वरीय गवर्मेंट का फोर्स है, रूहानी फोर्स है। वो फोर्स ऐसे बड़े-2 ऑफिसर्स को भी, लखपति-करोड़पतियों को भी अंदर नहीं आने देंगे। अंदर माने? रूहानी ब्राह्मणों के संगठन में नहीं आने देंगे, यहाँ सभा में आने ही नहीं देंगे। किसकी सभा में? यहाँ माने? यहाँ माने ब्राह्मणों की दुनिया में, संगमयुगी दुनिया में, ब्राह्मणों की सभा में। पक्के ब्राह्मणों की सभा में या

कच्चे ब्राह्मणों की सभा में? पक्के ब्राह्मणों की सभा में आने ही नहीं देंगे। सामने आएँगे, हो-हल्ला मचाने के लिए सामने आएँगे, कभी अलाउ नहीं करेंगे। चाहे पीछे से अपना फोर्स दिखाएँ, चाहे सामने आ जाएँ, तो भी उनको अलाउ नहीं करेंगे। उनके पीछे भले कितने भी बड़े आदमी आ जावें; क्योंकि ये कायदा है ना! क्या कायदा है रूहानी गवर्मेंट का? इन्द्र सभा में कोई पतित पाँव नहीं रख सकेगा। लॉ नहीं है। इस समय तो अलाउ किया जाता है। किस समय? जब तक रूहों का (रूहानी) बाप (सच्ची-2) महाशिवरात्रि के समय इस संसार में प्रत्यक्ष नहीं होता है तब तक। अभी बड़े-ते-बड़ी रात्रि दुनिया में हुई है या नहीं हुई है? अभी भी अज्ञान की रात्रि नहीं हुई है। बहुत हैं जो दम भरके कहते हैं दुनिया के सामने कि हमने भगवान बाप को पहचाना है। कहते हैं कि नहीं ? कहते हैं। वो भी अनिश्चयबुद्धि हो जाएँगे, दम टूट जाएगा। इस समय में तो अलाउ किया जाता है।

पूछते हैं- भई, तुम इस रूहानी सभा में कितने दिन आए? पूछा जाता है कि नहीं? रोज़ आए? जैसे मन्दिरों में रोज़ जाते हैं, गिरिजाघर-मस्जिद में सण्डे-2/शुक्रवार-2 जाते हैं; साप्ताहिक-2 जाते हैं कि नहीं? (किसी ने कहा- जाते हैं) तो यहाँ शूटिंग होती है कि नहीं? शूटिंग होती है। कोई सण्डे-2 भी नहीं आते, गुरुवार-2 या शुक्रवार भी नहीं आते, तो उनसे पूछा जाता है। अरे! गुरुवार, साप्ताहिक-2 तो छोड़ो, महीने में एक बार आते थे, वो भी आना बंद कर दिया, दो महीने में एक बार आते थे, वो भी रेग्युलर नहीं रहे। ऐसे हैं या नहीं हैं? हैं। तो उनसे पूछते हैं- भई, कितने दिन आए? रोज़ आए, एक महीने रोज़ आए? अरे! एक महीने का क्या ट्रायल किया? भगवान के बच्चे बने तो एक महीने का ट्रायल किया क्या? ये पाँच वर्ष की ट्रायल वाला भी फँस मरता है। जो पाँच वर्ष से लगातार आ रहा था, वो भी माया की मत में फँस मरता है। सो एक महीना और कितने रोज़? इससे भी ज़्यादा और कितने अलाउ करेंगे? एक महीना और दो महीने वालों को; सो तो ऐसे अलाउ करते हैं। ज़्यादा-से-ज़्यादा इन्द्र की सभा में किनको-2 अलाउ करते हैं? रोज़ आने वालों को तो करते ही हैं, सप्ताह में आने वालों को भी करते हैं, महीने में आने वालों को भी करते हैं और ज़्यादा-से-ज़्यादा दो महीने वालों को आने के लिए तो अलाउ करते ही हैं। अभी भीती के लिए/भय देने के लिए कम-से-कम दो महीने के लिए अलाउ करते हैं; क्योंकि **अगर दो महीने में एक बार भी नहीं आएँगे तो इन्द्रसभा में आने से वंचित कर दिया जाएगा।** क्यों? क्योंकि भगवान बाप गीता में कहते हैं/मुरली में कहते हैं कि दो महीने तक भी कोई बच्चे का (बाप से) कनेक्शन नहीं होता है तो बाप क्या समझते हैं? बच्चा मर गया, अनिश्चयबुद्धि की मौत मर गया। "कई तो 3/4 मास तक कोई पत्र ही नहीं लिखते हैं। कोई समाचार नहीं तो समझेंगे मर गया या बीमार है।" (मु.ता.11.1.69 पृ.1 अंत) तो ऐसा भीती देने के लिए अलाउ करते हैं। किनको? जो दो महीने में भी एक बार आते हैं। अभी तो अलाउ करते हैं। फिर पीछे क्या होगा? पीछे थोड़े ही अलाउ करेंगे। पीछे माने कब? जब मिलेट्री शासन होगा, मार्शल लॉ लगेगा तो दो महीने में जो एक बार आते हैं, उनको भी अलाउ नहीं करेंगे। जब ऐसों की संख्या जास्ती होने लगेगी। कैसों की? न हिन्दू, न सनातन धर्म के, न मुसलमान धर्म के मस्जिद में शुक्रवार-2 जाने वाले रहे, न क्रिश्चियन की लिस्ट में रहे सण्डे-2 जाने वाले, ऐसे जब क्रिश्चियन्स की संख्या/क्रिश्चियन्स की शूटिंग करने वालों की संख्या, मुसलमानों की संख्या, मुसलमान धर्म की शूटिंग करने वालों की संख्या जास्ती हो जाएगी तब अलाउ नहीं करेंगे; क्योंकि उस समय जो सत्य सनातन धर्म के हैं, अल्लाह अव्वलदीन के बच्चे हैं, उनकी संख्या, रोज़ आने वालों की, थोड़ी रह जाएगी कि ज़्यादा हो जाएगी? थोड़ी रह जाएगी। पाण्डव कितने होते हैं? पाँच पांडव गाए गए हैं। पाँच का मतलब ये है कि अभी हर सेंटर में, हर गीता-पाठशाला में अभी भी संख्या चार/पाँच तो

ज़्यादा ही हो जाती है, कभी-2 और ज़्यादा; लेकिन फिर क्या होगा? इससे भी कम हो जाएँगे। बहुत कम सभा रह जाएगी, नहीं तो अभी ढेर-की-ढेर हो जाती है। जैसे ब्रह्माकुमारियों में भी तो ब्राह्मण हैं या नहीं हैं? उनमें तो सैकड़ों हो जाते हैं। गुरुवार को/रविवार को ढेर हो जाते हैं। तो ये मिक्स ब्राह्मणों की संख्या कम कैसे हो? कोई तरीका होगा या नहीं होगा? ये सभा कम कैसे हो? देखो, सर्दी का मौसम है सतयुग-त्रेता, ठंडा दिमाग रहता है; गर्मी का मौसम है द्वापर-कलियुग, दिमाग गर्म होते हैं; और बरसात? ज्ञान-जल की बरसात कहो, वो बरसात का मौसम है, उस बरसात के मौसम में जो इन्द्र देवता के द्वारा ज्ञान बरसात होती है और वो ज्ञान बरसात का सीज़न भी जब समाप्त होता है तो बरसात के बाद क्या दिखाई पड़ता है? इन्द्र लट्ठ। उसका नाम क्या दिया? इन्द्र लट्ठ। छोटा डंडा नहीं, लाठी नहीं, क्या नाम दिया? इन्द्र लट्ठ। सिक्खों के गुरुद्वारे के सामने भी वो इन्द्र लट्ठ खड़ा हुआ दिखाया जाता है। भारतीय शास्त्रों में भी उस इन्द्र लट्ठ की बड़ी महिमा है। तो उस समय क्या होगा, जब ज्ञान-बरसात का टाइम पूरा हो जाएगा? माता के द्वारा, बेहद की माता ब्रह्मा के द्वारा ज्ञान की बरसात हुई और सुप्रीम टीचर के द्वारा, गीता माता के ज्ञान-गीत का क्लैरिफिकेशन की बरसात हुई, विस्तार में ज्ञान की बरसात हुई, ज्ञान-सागर के द्वारा ज्ञान की बरसात हुई। किसके द्वारा? ज्ञान-सागर के द्वारा। सूर्य धरती माता से चिपक के रहता है या सागर चिपक के रहता है? सागर माता के साथ होता है। सागर पति है और धरती माता है। सागर पिता की गोद में चौथा हिस्सा धरती का स्पष्ट देखने में आता है। पति की गोद में कौन बैठती है? पति जगतपिता शंकर की गोद में कौन बैठती है? माता पार्वती जगत-जननी बैठती है। तो ये मात-पिता हैं। उस माता की गोद में जो बच्चे खेल रहे हैं अभी भी, माता की छत्रछाया जिनके ऊपर है, तो पिता रहम करता है, फिर भी प्यार करता है, धर्मराज के हाथों में, मार्शल के हाथों में मार्शल लॉ नहीं सौंपता, प्यार के साये में बच्चे पलते हैं। तो अभी भी कोई को देखते हैं। कौन देखते हैं? अरे! शिव बाप देखते हैं। किसकी आँखों के द्वारा? मुकर्रर रथधारी हीरो पार्टधारी की आँखों के द्वारा देखते हैं। अभी भी देखते तो हैं कि ये ब्राह्मण-जीवन में, इतने लम्बे समय तक बेसिक में भी, एडवांस में भी, वर्षों-2 से विकारियों का संग छोड़ता ही नहीं। ऐसे बैठे हैं कि नहीं? बैठे हैं। विकारियों के साथ अन्नदोष को छोड़ते ही नहीं। ऐसों-2 कोई-2 को अभी भी बाप देखते हैं इन आँखों का लोन ले करके। कौन-सी आँखों का लोन ले करके देखते हैं? (किसी ने कहा- राम बाप की) हाँ, सुनते हैं उनके कानों से। इनके कानों का लोन लेकर सुनते हैं। बहुतों के द्वारा सुनते हैं कि ये एक ही किचिन में बना हुआ, विकारियों के हाथ का भी खाना खाते हैं, विकारियों का कमाया हुआ धन भी खाते हैं। ये बात सुनते हैं और विकारियों के साथ जो रोज़ विकार में जाते हैं, उनका संग भी करते हैं। दिखाने के लिए घण्टे/2 घण्टे का सत्संग करते हैं, ईश्वर सत का संग करते हैं, गॉड इज़ ट्रूथ का संग करते हैं। बाकी 20/22 घण्टा क्या करते हैं? विकारियों का संग करते हैं। तो सुनते हैं, देखते हैं कि ये पतित आ करके बैठा है, तो बाप तो बोलेंगे- ये आपे ही सज़ा खाएगा, जब चढ़ेगा ज्ञान-योग की प्रैक्टिस करते-2। भले प्रैक्टिस भी अच्छी हो जाएगी; लम्बे समय तक ज्ञान सुनेगा, योग की प्रैक्टिस करेगा तो ऊँचा चढ़ेगा कि नहीं? चढ़ेगा। जब चढ़ेगा; क्योंकि वो तो समझते हैं ना कि बरोबर ये जो पावन बनने का अभ्यास कर रहे हैं, सिर्फ़ अभ्यास करते हैं थोड़े समय का, जब यहाँ थोड़े समय के लिए सत्संग में आते हैं। उसमें भी क्या पता, बुद्धियोग से दुनियादारी याद आती रहती है या सत्संग में बुद्धि एकाग्र रहती है? बहुत हैं जिनके वायब्रेशन (से), संग के रंग से, संगदोष से, अन्नदोष से वायब्रेशन ही खराब हो गए, वो प्रैक्टिकल में पावन नहीं बनते हैं। मन-बुद्धि से विकारी संकल्प चलते हैं या नहीं चलते हैं? चलते हैं। दृष्टि से फिर पतित बनेंगे या नहीं बनेंगे? पतित दृष्टि-वृत्ति बनेगी या नहीं बनेगी?

बनेगी। ये जो पावन नहीं बनते हैं, पतित हो करके बैठे हैं, अपन को बाप के सामने समझते हुए बैठे हैं। वो त्रिकालदर्शी बाप का सामना करने वाले हैं, दुश्मन हैं। सामना कौन करता है? दुश्मन हैं या दोस्त हैं? (किसी ने कहा- दुश्मन) डरते ही नहीं हैं। बच्ची ऐसे बहुत हैं, क्या कहा? इन्द्रसभा में आने वाले ऐसे बच्चे, जो आगे इन्द्रसभा प्रत्यक्ष होगी, उस सभा में पहुँचने वाले हैं, समझते हैं कि हम पहुँचेंगे; परंतु ऐसे विकारी अभी बहुत बैठे हैं। जब कहाँ भी इस दुनिया में जाते हैं, बॉम्बे में जाते हैं- माया की नगरी में या दिल्ली में जाते हैं, जहाँ नई दुनिया की राजधानी स्थापन करने वाला बाप बैठा हुआ है, तो दोनों ही स्थान पर, माया की नगरी हो, चाहे बाप की नई दुनिया की राजधानी बनने वाली नगरी हो; कौन-सी? दिल्ली। दोनों जगह बहुत ही पतित आ करके बैठते हैं। रात भर पतित बनते हैं और दिन में बाप के सन्मुख आकर बैठ करके सोते हैं। क्या कहा? थक जा(ते हैं) ना! तो बाप के सामने आ करके भी बैठेंगे अड़ करके- देखो हम हैं! क्या बिगाड़ लोगे हमारा! ऐसे बहुत ही पतित आ करके बैठते हैं। तो पतित को, देखो यादगार मंदिर बने हुए हैं टिकानों में। तब भी स्नान-पानी करके; क्योंकि पतित तो हैं ही। भले स्नान करके यादगार मंदिरों में भगत लोग आते हैं। आते हैं कि नहीं ? तब भी, कभी भी कोई मंदिर में आवेंगे, भले स्नान करके आते हैं, तो भी पतित कहे जाएँगे या पावन हैं? (किसी ने कहा- पतित) ऐसी शूटिंग कहाँ होती है? ऐसी रिहर्सल कहाँ होती है? अभी संगमयुग में, बाप जहाँ आया हुआ है, जो बाप का घर मधुबन कहा जाता है। क्या कहा जाता है? मधुबन में मुरलिया बाजे। भगवान बाप आ करके जहाँ वाणी चलाते हैं वहाँ आने की शूटिंग करते हैं कि नहीं करते हैं? कर रहे हैं। तो ऐसा भी समय आएगा। ऐसे कोई भी आएँगे, बिगर स्नान कभी कोई मंदिर में जाते नहीं होंगे। इतनी भावना होती है कि नहीं, भक्तिमार्ग में? कहाँ की यादगार? संगमयुग की यादगार है कि ज्ञान-स्नान करके घर में जाते हैं, फिर पतित बनते हैं। तो अभी वो तो है स्थूल स्नान; काहे का? पानी का स्नान और ये है फिर ज्ञान-सागर में ज्ञान का स्नान। तो ज्ञान-स्नान से, ज्ञान-सागर के ज्ञान-स्नान से, भगवान के ज्ञान-स्नान से आत्माओं को पवित्र होना ही है या नहीं होना है? होना ही है। बिल्कुल शुद्ध होना पड़े। तो अपने-आप अपनी बुद्धि से समझ करके, जैसे देवात्माएँ इशारों से समझती हैं। मनुष्य होंगे तो कहने से समझेंगे, बार-2 सुन करके समझेंगे; लेकिन जो न देवता बनते हैं, न द्वापर-कलियुग के मनुष्य बनते हैं, चंचल मन वाले, जो जानवरों की तरह, खूँखार जानवरों की तरह राक्षस बन करके बैठ जाते हैं भगवान की सभा में, वो हैं ही आसुरी सम्प्रदाय। कौन-से सम्प्रदाय? रावण सम्प्रदाय। भले रावण के कोई भी मुख के सम्प्रदाय हों। रावण का चित्र है तो चरित्र करने वाले भी कोई होंगे या नहीं होंगे? प्रैक्टिकल में हैं। इसको कहते ही जाते हैं- शैतान राज्य। अभी भी ब्राह्मणों की दुनिया में राम-राज्य है या शैतान-राज्य है? शैतान-राज्य है। माया रूपी रावण-राज्य। माया बेटी। क्या है सम्बन्ध? है तो बेटी; लेकिन मायावी बेटी है। अंदर एक और बाहर से दूसरी। बाहर तो दिखाएगी लोगों में। क्या दिखाएगी? कि मैं बाप की बच्ची हूँ और अंदर रह करके वास्तव में वो बाप की बच्ची बन करके नहीं रहती। जैसे बाप मुरली में कहते हैं कि कलियुग के अंत में ऐसा शैतानी-राज्य हो जाता है कि बाप भी बच्ची को नहीं छोड़ता। ऐसी मायावी बच्ची जो मंद बुद्धि रूपी पेट वाली बच्ची (मंदोदरी) है। ज्ञान-सागर बाप के प्रैक्टिकल रूप को भी नहीं जानती। जानती भी है तो जैसे रावण जानता था- ये भगवान है; फिर भी रावण को फॉलो करती थी। जानते हुए भी भगवान बाप को नहीं मानती थी। भगवान बाप के ज्ञान के रास्ते में दीवाल बन करके खड़ी हो जाती थी। मुसलमानों में उनका इबादत का स्थान जो मस्जिद बनाई जाती है, उसमें सामने क्या खड़ी होती है? (प्राय:) दीवाल खड़ी होती है। ऐसे मुस्लिम धर्मों में कन्वर्ट होने वाले ब्राह्मणों की दुनिया में नीच कुल के वो ब्राह्मण अभी

भी (उसी चैतन्य दीवाल के सामने) आ करके बैठ रहे हैं। तो ब्राह्मणों की दुनिया में भी शैतान-राज्य है या राम का राज्य है? (किसी ने कहा- शैतान-राज्य) अरे! राम का राज्य अपनी पत्नी के ऊपर है कि उसको भी रावण अपने कण्ट्रोल में लेकर बैठा है? किसके राज्य में है? राम के राज्य में है राम की पत्नी या रावण-राज्य में है? रावण-राज्य में। यथा राजा तथा प्रजा। क्या कहा? क्या इशारा दिया? यहाँ राजा कौन है ब्राह्मणों की दुनिया में? अरे! राम, राजा है? राजा(ओं) के सामने तो जा करके थर-2 काँपते थे। जो चोर, डकैत हैं, लुच्चे-लफंगे, राजा के सामने जब जाते हैं तो कैसे काँपते हैं? थर-2 काँपते हैं और यहाँ तो आ करके सामने बैठ जाते हैं। तो राम का राज्य है? कहेंगे, राम का राज्य है? अभी राम का राज्य नहीं है। फिर भी राम के घर में, भगवान के घर में माया-बेटी का राज्य है या नहीं है? (किसी ने कहा- है) माया-रावण आता है या नहीं आता है? आता है। शैतान-राज्य है। यहाँ भी दुख का राज्य है ना! किसका राज्य है? दुख देने वाले माया रूपी (रुलाने वाले) रावण का राज्य है। जिसके प्रभाव में सभी बच्चे आ रहे हैं- कोई कम, कोई ज़्यादा।

तो अभी राम-राज्य तो सब जानते हैं कि सतयुग को कहेंगे 'राम-राज्य'। अभी सबके अंदर जो वायब्रेशन चलते हैं, जो संकल्प चलते हैं, जो वाचा चलती है, जो कर्मेन्द्रियाँ कर्म करती हैं, सत् ही करते हैं? कर्मेन्द्रियों से सत्य कर्म करते हैं? इन्द्रियों से व्यभिचारी तो नहीं बनते? दृष्टि व्यभिचारी तो नहीं होती? ब्राह्मणों की सभा में अभी क्या हाल है? बाप तो कहते हैं कि दृष्टि से 10/20/50 भूलें बच्चे रोज़ ही करते होंगे। तो बाप झूठ बोलता है? (किसी ने कहा- नहीं) रोज़ ही दृष्टि विकारी बनती है, व्यभिचारी बनती है। तो राम-राज्य कहेंगे अभी ब्राह्मणों की दुनिया में? नहीं कहेंगे। कोई भी दुनिया में, कलियुग को तो राम-राज्य कभी नहीं कहेंगे, एकदम नहीं कहेंगे। कलियुग को तो ज़रूर कहेंगे कि भई रावण-राज्य है। इस कलियुग में किनका राज्य है? रावण-राज्य। दुनिया में जितनी भी प्रजा है, कोई भी धर्म वालों की प्रजा हो, या तो कामी-इस्लामियों की प्रजा है, फॉलोअर, या तो क्रोधी-क्रिश्चियन्स की प्रजा है, जो जब अंदर से क्रोध में आते हैं तो दुनिया को भस्म करने के लिए क्या बना डालते हैं? ऐटम बम्ब बना डालते हैं। इतने खतरनाक हैं! इस कलियुग में एकदम इतने खतरनाक हैं! क्या कहा? ये बॉम्ब किसलिए बनाते हैं? दुनिया का विनाश करने के लिए; और तुम ब्राह्मणों की दुनिया में बड़े-ते-बड़ा बॉम्ब कौन-सा है? परमात्म प्रत्यक्षता बॉम्ब। बड़े-ते-बड़ा बॉम्ब फूटेगा तो दुनिया की जो अज्ञानी आत्माएँ हैं शुरुआत से ही, जिन्होंने ईश्वरीय ज्ञान लिया ही नहीं उनकी तो बात छोड़ो, जो ब्राह्मणों की दुनिया की बेसिक आत्माएँ हैं या एडवांस की भी बीजरूप आत्माएँ हैं, अलग-2 धर्मों के बीज हैं, उन सबमें एक जैसा ज्ञान है? अलग-2 धर्मों का ज्ञान है। कम्प्लीट ईश्वरीय ज्ञान है या नीम हकीमे खतरेजान है? अधूरे ज्ञानी हैं। आज बाप को पहचानते हैं और कल (किसी ने कुछ कहा-...) हाँ, मनुष्य जो सामाजिक प्राणी है, समाज के बिना जीवन ही नहीं हो सकता, ऐसे सामाजिक प्राणी मनुष्य जिनका मन चंचल हुआ पड़ा है, वो समाज के प्रभाव में आ करके बाप को भूल जाएँगे। समाज ऐसा प्रचण्ड रूप धारण करेगा। ये गवर्मेंट, जिस्मानी गवर्मेंट प्रचण्ड रूप धारण करेगी और मीडिया भी प्रचण्ड रूप धारण करेगी और इनको हिलाएगा कौन? प्रचण्ड रूप धारण करने के लिए इनको कौन फोर्स देगा? (किसी ने कहा- शिव बाप) शिव बाप (नहीं), माया-रावण।

तो कलियुग को ज़रूर कहेंगे- भई रावण-राज्य है। इस रावण-राज्य में सब पतित हैं। सब माने? कोई कम पतित, कोई ज़्यादा पतित। जो समझते हैं कि कर्मेन्द्रियों से पतित होना वो ही आत्मा का पतित होना है, वो तो मुगालते (भ्रम) में हैं ही; लेकिन ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार आत्मा पतित होती है और पावन बनती है या शरीर

पतित-पावन बनता है? आत्मा पतित से पावन पहले बनती है। तो आत्मा शरीर की इन्द्रियों के संग के रंग में आ करके ईश्वरीय स्मृति का पक्का अभ्यास करके पावन बन सकती है या नहीं बन सकती है? पावन बन सकती है। जैसा कि यादगार मन्दिर में दिखाया है। शिव के मन्दिर में क्या दिखाया है? शिव जो निराकार है, ज्योतिबिन्दु है, अति सूक्ष्म है, वो साकार बड़े रूप में, लिंग में प्रवेश करता है। जिस लिंग की क्या स्टेज है? उस लिंग की मन-बुद्धि रूपी ऐसी स्टेज है, जिस स्टेज में नाक, आँख, कान, हाथ, पाँव याद हैं? नहीं याद हैं। इसलिए हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान लिंग को नहीं दिखाए जाते। तो क्या उसे शंकर लिंग कहें? शंकर लिंग कहा जाता है? नहीं कहा जाता। जब तक उस लिंग रूप साकार से, उसके नेत्रों से अन्य धर्मपिताओं की तरह निराकारी स्टेज स्पष्ट दिखाई देने न लगे। जैसे क्राइस्ट, बुद्ध, गुरूनानक के चेहरे को, आँखों को ध्यान से देखो, क्या दिखाई देता है- आत्मा निराकार या साकार देह? (किसी ने कहा- निराकार) निराकारी स्टेज दिखाई देती है। और वो तो है बापों का बाप, कौन? शिव बाप। वो शिव बाप जब शंकर में प्रत्यक्ष रूप से प्रत्यक्ष होता है, जन्म लेता है बच्चे की तरह। जैसे बच्चा पहले माँ के गर्भ में होता है तो प्रत्यक्ष होता है या गुप्त होता है? गुप्त होता है। तो अभी वो सुप्रीम सोल बाप शिव गुप्त पार्ट बजाय रहा है या बच्चे की तरह प्रत्यक्षता रूपी जन्म ले करके प्रत्यक्ष पार्ट बजाय रहा है? गुप्त पार्ट बजाय रहा है। तो जब वो महाशिवरात्रि में प्रत्यक्ष होगा, जैसी घोर अज्ञान अंधकार की रात्रि इस दुनिया में न कभी हुई है और न आगे कभी होगी। जिस अज्ञान रात्रि में इस (बाहरी) दुनिया के 500-700 करोड़ मनुष्यात्माएँ तो अज्ञान अंधेरे में (हैं ही)। सुप्रीम सोल बाप को, जो (ज्ञान) बीज डालने वाला बाप भी है, सुप्रीम टीचर के रूप में भी पार्ट बजाता है; लेकिन अभी गुप्त पार्ट बजाता है और जो सतगुरू भी है। एक ही आत्मा के द्वारा तीनों पार्ट बजाता है या अलग-2 व्यक्तित्व हैं? एक ही व्यक्तित्व है। उसको भूल जाएँगे। दुनिया तो भूली हुई है ही। बेसिक ब्राह्मण वाले भी, जो कहते हैं- हमें भगवान बाप मिल गया, वो भी भगवान के प्रैक्टिकल रूप को नहीं जानते हैं और जो (अपन को एडवांस ब्राह्मण) कहते हैं, उनका भी कहना है- हमें भगवान बाप साकार शरीर में, प्रैक्टिकल रूप में मिल गया, वो भी भूल जाएँगे। मायावी समाज के फोर्स से, जिस्मानी गवर्मेंट के फोर्स से और प्रकृति रूपिणी धरणी माता के फोर्स से, जो अंत में तामसी रूप धारण करके महाकाली बन जाती है, सब पतितों का गला काट देती है, मृत्यु के घाट पहुँचा देती है, अनिश्चयबुद्धि बना देती है, जब सब अज्ञान की (नींद) में सोए हुए होंगे, तब भगवान बाप एक सत् मूर्ति के द्वारा इस सृष्टि पर प्रत्यक्ष होता है। है (चेतन) मूर्ति, मूर्तिमान साकार; अमूर्त नहीं है; लेकिन अव्यक्त मूर्ति है। कैसी मूर्ति? अव्यक्त स्टेज वाली मूर्ति। जिसकी यादगार शिवलिंग मन्दिरों में, सारी दुनिया में पाया गया है और सबसे जास्ती तादाद में पाया जाता है। उस एक के द्वारा पहले प्रत्यक्ष होंगे और उसको पहचानने वाली शिव की अष्ट-मूर्तियाँ जो गाई और पूजी भी जाती हैं, जिन अष्ट-मूर्तियों की यादगार दक्षिण भारत में बनी हुई है। अष्टदेवों की मूर्तियों के मन्दिर नॉर्थ इण्डिया में नहीं बने हैं। कहाँ बनी हुई हैं? (किसी ने कहा- दक्षिण में) दक्षिण भारत में क्यों? भगवान का (प्रत्यक्षता रूपी) जन्म तो नॉर्थ इण्डिया में गाया हुआ है- चाहे कृष्ण के रूप में मथुरा में, चाहे राम के रूप में अयोध्या में, चाहे शंकर के रूप में काशी नगरी में। फिर दक्षिण भारत में अष्ट-मूर्तियाँ और उनके मन्दिर क्यों प्रसिद्ध हैं? क्योंकि दक्षिण भारत के जो लोग हैं, जो दक्षिण भारत (सागर) से घिरा हुआ है। जो (भारत का) विदेश है, वो (सारे स्टेट्स) काहे से घिरे हुए हैं? (ज्ञान) सागर से घिरे हुए हैं। जहाँ ज्ञान-सागर बाप उन भारत के विदेशियों के बीच पहले-2 प्रत्यक्ष होता है। भले बिचारे भाषा भी नहीं जानते। भगवान की भाषा क्या है? (किसी ने कहा-हिन्दी) हिन्दी भी नहीं जानते, तो भी (तीखी) बुद्धि से भगवान बाप को पहचान लेते

हैं। इसलिए वो अष्टदेव भी कहाँ से प्रत्यक्ष होते हैं? कहाँ से प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेते हैं? जो शिव की अष्ट-मूर्तियाँ मानी जाती हैं, वो अष्ट-मूर्तियाँ भगवान बाप को पहले पहचानती हैं या एडवांस के सारी बीजरूप आत्माएँ पहचानेंगी? अष्ट-मूर्तियाँ पहले पहचानती हैं। फिर नम्बरवार दूसरे पहचानेंगे। (फिर बाद में) कोई (ब्रह्मा की) हज़ार की लिस्ट में आने वाली माला, कोई 16 हज़ार की माला, कोई 108 की माला। (जिस माला रूपी संगठन की) यादगार हर धर्म में स्मरण की जाती है, सिमरी जाती है। चाहे इस्लामी हों, वो भी माला घुमाते हैं; क्रिश्चियन्स हों, वो भी माला घुमाते हैं; सिक्ख हों, बौद्धी हों, वो भी माला घुमाते हैं। तो हर धर्म की चुनी हुई श्रेष्ठ-2 आत्माएँ जो ब्राह्मणों की इस संगमयुगी दुनिया में आ करके अभी नम्बरवार कुरियों के ब्राह्मण बनते हैं, उनमें से चुने हुए फर्स्ट क्लास सूर्यवंशी (मणके रूपी आत्माएँ) जो सृष्टि के आदिकाल से ले करके अन्तिम, 83/84वें जन्म तक ज्ञान-सूर्य के सहयोगी भुजाएँ बन करके रहती हैं, वो पहले पहचानेंगी या दूसरे पहचानेंगे? वो (ही) पहले पहचानेंगी। वो ही है दुनिया की नई-ते-नई राजधानी, ईश्वरीय राजधानी, जो 100 परसेण्ट सात्विक रूप वाली होगी। उस राजधानी में नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने वाले राजा-रानी भी होंगे, बड़े-2 राज्याधिकारी भी होंगे। सेनापति, महामंत्री, बड़े-2 राज्याधिकारी होते हैं ना! नहीं होते? होते हैं। कोई रूहानी फोर्स ले करके छत्रछाया के रूप में खड़े रहते हैं। राम-राज्य की राजधानी का चित्र किसी ने देखा है? कोई छतरी लेकर खड़े हुए हैं, कोई चँवर डुलाय रहे हैं, दिमाग ठंडा कर रहे हैं। विश्व का राज्य होगा तो कभी-2 दिमाग गर्म भी तो हो सकता है? नहीं हो सकता? (किसी ने कुछ कहा-...) विष्णु को(के) बुद्धि रूपी पाँव को कौन दबाय रहा है? (किसी ने कुछ कहा-...) हाँ, उस राजा के राज्य का बड़े-ते-बड़ा अधिकारी, कौन? रानी, महारानी। वो क्या कर रही है? बुद्धि रूपी पाँव दबाय रही है। विश्व का राज्य है तो बड़ी-2 समस्याएँ भी आएँगी या नहीं आएँगी? (किसी ने कहा- आएँगी) उन समस्याओं को पवित्रता के वायब्रेशन से सहज कर देगी। दुनिया के सारे कार्य काहे से होते हैं? पवित्रता की शक्ति से। रूहानी मिलेट्री का फोर्स (जहां) कि बड़े-2 अधिकारी बन करके खड़े होंगे। कोई पाँव पखारेंगे माना शूद्रों का काम क्या होता है? पाँव (धोने) का, दास-दासी का काम होता है। तो उस राजधानी में सब चाहिए। राजा-रानी भी होंगे, छोटे-बड़े राज्याधिकारी भी होंगे, छोटे-बड़े दास-दासी भी होंगे। दास-दासी भी बड़े-छोटे मर्तबे वाले होते हैं। जैसे माता तो जन्म देती है; लेकिन जो दाई माँ होती है, बच्चे की पल-2 सुरक्षा करने वाली, वो भी माता मानी जाती है या नहीं मानी जाती है? माता मानी जाती है। उस माता के लिए भी जो प्रजाजन होंगे, वो आदर का भाव रखेंगे, मान-मर्तबा देंगे। तो सब प्रकार के होंगे। 8 के अंदर ही होंगे; लेकिन सारे ही जिस-2 मंच पर (ऊपर-नीचे-पीछे) (हो) करके या कुर्सी पर बैठ करके अपना कार्य करेंगे, वो 100 परसेण्ट सच्चा कार्य करेंगे। उनकी (चित्रों के रूप में) यादगार भक्तिमार्ग में भी चलती है। चलती है कि नहीं? राणा प्रताप और उनके बाप उदयसिह, उनकी कथा सुनी और देखी है? धाय माँ ने क्या किया था? अपने बच्चे को दुश्मन के सामने डाल दिया, तलवार के घाट उतरने दिया और राजा के बच्चे को बचा लिया। तो माता का काम किया या नहीं किया? (किसी ने कहा- किया) तो देखो, सच्चे से सच्चे दास-दासी भी यहाँ तैयार होते हैं; लेकिन पहली-2 जो राजधानी स्थापन होती है, जिसकी हिस्ट्री बनती है इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर, भले उस हिस्ट्री को पूरा जानने वाला एक परमपिता परमात्मा ही है, जो आ करके बताता है कि उस सृष्टि के आदि की जो तिथि-तारीख है; क्या है? लक्ष्मी-नारायण के चित्र में दी हुई है- संवत् 01.01.01। भगवान बाप जब आ करके प्रत्यक्ष होते हैं तो राजा जनक को एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति देते हैं। जीवनमुक्ति स्वर्ग में होती है या नर्क में होती है? स्वर्ग में होती है

और स्वर्ग में राजधानी होगी या नहीं होगी? (किसी ने कहा- होगी) तो राजधानी भी देते होंगे! एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति देते हैं, तो राजधानी की स्थापना एक सेकेण्ड में नहीं करते होंगे? (किसी ने कहा- करते होंगे) तो भगवान का प्रैक्टिकल में आना, इस संसार में प्रत्यक्ष होना कि जो इन आँखों से प्रैक्टिकल में देखे, जो इन कानों से प्रैक्टिकल में सुने, उसका दिल क्या बोले? (किसी ने कहा- मेरा बाप आ गया।) एवरलास्टिग बोले या आज बोले, कल अनिश्चयबुद्धि हो जाए? एवरलास्टिग बोले। उसे क्या कहेंगे- मृत्युलोक वासी या अमरलोक वासी? अमरलोक वासी। वो अमरलोकों के देवताओं की दुनिया का फाउण्डेशन पड़ जाता है। वो (समय) पुरुषोत्तम वर्ष भी कहा जाता है, पुरुषोत्तम युग भी कहा जाता है। श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ पुरुषोत्तम युग का श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ सेकेण्ड। इसी संगमयुग में पुरुषोत्तम दिन भी है और पुरुषोत्तम बनने की पुरुषोत्तम घड़ी भी है। जिसकी यादगार कृष्ण का जन्म गाया जाता है। कृष्ण बच्चा है या बाप है? बच्चा है। जिस बच्चे को बाप इस कामाग्नि से, धू-2 जलती हुई दुनिया में उस आत्मा को, उस बच्चे को, सृष्टि रूपी पहले पत्ते को बचाय लेता है या छोड़ देता है? बचाय लेता है। शारीरिक रूप से बचाता है या सिर्फ़ आत्मा को बचा करके परमधाम ले जाता है? शारीरिक रूप से (भी) बचा लेता है। माने वो कृष्ण की आत्मा उर्फ दादा लेखराज ब्रह्मा की आत्मा राम वाले व्यक्तित्व में, शंकर के व्यक्तित्व में सम्पूर्ण चन्द्रमा बन करके सदाकाल के लिए समा जाती है, जब तक ठेठ सतयुग में शारीरिक रूप से जन्म न ले तब तक के लिए। तो बाप और बच्चे का जन्म इकट्ठा है या आगे-पीछे है? इकट्ठा जन्म है। माना जैसे शिव बाप अव्यक्त है, आँखों से देखने में नहीं आता, ऐसे ही कृष्ण की आत्मा भी अव्यक्त है। वो भी सम्पूर्ण बनती है, बिन्दु बनती है या अधूरी है? देहभान में रहती है? बिन्दु बन करके राम के शरीर में विराजमान होती है। एक शरीर है और बाप-बेटे का जन्म भी इकट्ठा है। ओमशान्ति

Contact Us
Address
A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085
Mobile - 9891370007, 9311161007
Email - a11spiritual1@gmail.com
Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM
Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV
@A1SPIRITUALUNIVERSITY
Twitter - @adhyatmikaivv
Instagram - @adhyatmikvidyalaya
Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025